अध्याय

04

एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!

शिवप्रसाद मिश्र रुद्र

© JCERT not to be republished

शिवप्रसाद मिश्र रुद्र'

1. **लेखक परिचय**

   जन्म - 27 सितम्बर 1911 ई. में हुआ था।

   जन्म स्थान-काशी, उत्तर प्रदेश में

   शिक्षा- हरिश्चंद्र कॉलेज,क्वींस कॉलेज,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी।

   मृत्यु - 31अगस्त 1970 ई. में हुआ था।

2. **साहित्यिक परिचय**

प्रमुख रचनाएं

उपन्यास-बहती गंगा , सुचिताच, रामबोला रामबोले

गज़ल संग्रह- गजलिका

नाटक - महाकवि कालिदास,दशाश्र्वमेध

गीत एवं व्यंग्य गीत संग्रह -ताल तलैया , परीक्षा पच्चीस

पाठ परिचय

*शिवप्रसाद मिश्र 'रूद्र' की प्रमुख कृति' बहती गंगा '(1952) में प्रकाशित हुआ।

*बहती गंगा उपन्यास का एक अंश' ऐही ठैयां झूलनी हैरानी हो रामा ! है।

*इस रचना में यथार्थ और आदर्श दंत कथा तथा इतिहास, मानव मन की कमजोरियो के उदात्त स्वरुप को व्यक्त किया है।

*यह कहानी गीत संगीत के माध्यम से एक अलग तरह की प्रेम कहानी को अंजाम देती है।

*'ऐही ठैयां झूलनी हैरानी हो रामा !' कहानी में बनारस में गाने वालियों की एक परंपरा(गौनहारिन परंपरा) का वर्णन किया गया।

*'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!' पाठ के माध्यम से लेखक ने गाने-बजाने वाले समाज के देश के प्रति असीम प्रेम, विदेशी शासन के प्रति क्षोभ और पराधीनता की जंजीरों को उतार फेंकने की तीव्र लालसा का वर्णन किया है।

कथा–सार

1. 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा! नामक इस पाठ में समाज से बहिष्कृत दुलारी के स्वभाव का चित्रण है। जहाँ वह अपने कठोर व्यवहार के लिए प्रसिद्ध है, वही कठोर हृदया दुलारी के मन के किसी कोने में करुणा भी है। वह उदार है। टुन्नू के प्रथम परिचय में टुन्नू के भाव का उसके हृदय पर प्रभाव पड़ता है। टुन्नू की अपने प्रति भावना को एक लहर मात्र मानने वाली दुलारी को यह समझने में देर नहीं लगी कि जिस वस्तु पर वह आसक्त है उसका सम्बन्ध शरीर से नहीं; आत्मा से है। वह टुन्नू की मौत से आहत हो उठी और उसकी दी हुई गांधीवादी धोती को पहन उसके प्रति आत्मीय श्रद्धा प्रकट की।

2. महाराष्ट्र की महिलाओं की तरह दुलारी धोती लपेटे, कच्छ बाँधे, दंड लगा रही थी कि दुलारी के शरीर से पसीना निकल आया। अब दुलारी

© JCERT not to be republished

ने दंड को समाप्त करके, अंगोछे से पसीना पोंछकर, जूड़ा को खोलकर सिर का पसीना सुखाया और आइने के सामने खड़ी होकर अपनी भुजाओं को गर्व से देखते हुए प्याज के टुकड़े, हरी मिर्च के साथ चने चबा रही थी तभी दरवाजे पर टुन्नू आया, दुलारी ने जल्दी से कच्छ खोलकर अच्छे से धोती पहनकर दरवाजे को खोला। दुलारी ने आँखें मिलाते हुए कहा- 'तुम फिर यहाँ टुन्नू? मैंने तुम्हें यहाँ आने के लिए मना किया था। इतने में टुन्नू दुखी मन से बगल से बंडल निकाल दुलारी के हाथों में दिया, दुलारी ने देखा जिसमें गांधी आश्रम की बनी खद्दर की साड़ी थी। देखते ही दुलारी चीख पड़ी और पूछा इसे तुम क्यों लाए? टुन्नू का जीर्ण वदन सूख गया। सूखे गले से कहा-होली का त्यौहार था। दुलारी चिल्लाई-होली का त्योहार था तो यहाँ क्यों आए, जलने के लिए तुम्हें कहीं चिता नहीं मिली। तुम मेरे कौन हो सो यहाँ चले आए। खैरियत चाहते हो तो इस कफन को लेकर सीधे चले जाओ। दुलारी ने धोती टुन्नू के पैरों में फेंक दी। टुन्नू के आँसू भर आए और टप-टप काजल से मलिन आँसू नीचे पड़ी धोती पर गिरने लगे। टुन्नू-"मन पर किसी का बस नहीं, वह रूप या उमर का कायल नहीं होता" कह कर सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा। टुन्नू को जाते हुए दुलारी भी देखती रही। उसकी भौं अभी वक्र थी परन्तु नेत्रों में कौतुक और कठोरता का स्थान करुणा और कोमलता ने ले लिया। उसने भूमि पर पड़ी धोती उठाई जिस पर काजल से सने आँसुओं के धब्बे पड़ गए थे; उसने एक बार फिर जाते हुए टुन्नू की ओर देखा और स्वच्छ धोती पर पड़े धब्बों को बार-बार चूमने लगी।

3. दुलारी का नाम गानेवालियों में था। उसके अंदर सवाल-जबाव करने की अद्भुत क्षमता थी। उसके सामने गाने में बड़े से बड़े शायर घबराते थे। एक बार खोजवाँ बाजार में भादों में तीज के अवसर पर कजली दंगल हुआ। इस दंगल में दुलारी ने कजली गाया। खोजवाँ वालों ने दुलारी को अपनी ओर होने से जीत पक्की समझ ली थी। दूसरी ओर बजरडीहा वालों की ओर से टुन्नू को गीत गाने के लिए बुलाया गया था। जब दंगल में सवाल जबाव के लिए दुक्कड़ पर चोट पड़ी तो बजरडीहा वालों की ओर से सोलह-सत्रह वर्ष का बालक टुन्नू, दुलारी की ओर हाथ उठाकर ललकार उठा-उसने गाना गाया। टुन्नु के गीत पर दुलारी को मुस्कुराते देख लोग हैरान थे बात-बात पर तीरकमान हो जाने वाली दुलारी आज अपने स्वभाव के प्रतिकल खड़ी-खड़ी मुस्कुरा रही है। दुलारी टुन्नू को मुग्ध खड़ी सुन रही थी। तब खोजवाँ वालों को अपनी विजय पर पूरा विश्वास न रह गया था कि वह आज जीत सकेंगे। टुन्नू का इस प्रकार लोगों के बीच में गाने का

© JCERT not to be republished

यह तीसरा-चौथा अवसर था। उसके पिता जी सत्यनारायण की कथा, श्राद्ध और विवाह में पंडित का कार्य करते थे। पुत्र टुन्नू को शायरी का चस्का लग गया था। उसने भैरोहेला को अपना उस्ताद बनाया और कजली की रचना करने में कुशल हो गया। इसी विशेषता के कारण बजरडीहा वालों ने उसे इस दंगल में अपनी ओर से बुलाया था। टुन्नू की शायरी पर उन्होंने वाह-वाह का शोर मचाकर आकाश को सिर पर उठा लिया जिससे खोजवाँ वालों का रंग उतर गया।

4. दुलारी की बारी आई और अपनी दृष्टि मद-विह्वल बनाते हुए टुन्नू के दुबले-पतले शरीर को लेकर उसका स्वर फूटा-वह कह रही थी-वैसे तू बगुला भगत है। उसी की तरह तुझे भी हंस की चाल चलने का हौसला हुआ है, परन्तु कभी न कभी तेरे गले में मछली का काँटा जरूर अटकेगा और तेरी कलई खुल जाएगी। दुलारी के उत्तर में टुन्नू ने कहा-मन में जितना आए जी भर कर गालियाँ दो, पर अपने मन व्यथा को डंके की चोट पर सुनाएँगे। इस पर फेंकु सरदार लाठी लेकर टुन्नू को मारने दौड़े। दुलारी ने टुन्नू की रक्षा की। यही दोनों का प्रथम परिचय था। फिर उस दिन लोगों के बहुत कहने पर दोनों में से किसी ने गाना स्वीकार नहीं किया।

5. टुन्नू वहाँ से चला गया, दुलारी सामान्य हो गई और सोचने लगी कि आज टुन्नू की वेशभूषा में अन्तर था, उसने पूछा नहीं; या पूछने का अवसर ही नहीं मिला। फिर दुलारी ने टुन्नू वाली धोती उठाई और सब कपड़ों के नीचे सन्दूक में रख दी। टुन्नू की दुर्बलता का अनुभव दुलारी को पहली ही मुलाकात में हो गया था किन्तु उसे लहर मात्र मानकर दुलारी ने छोड़ दिया था। टुन्नू दुलारी के पास आता और मन की कामना प्रकट किए बिना ही धीरे से खिसक जाता था। दुलारी टुन्नू के इस उन्माद पर मन ही मन हंसती थी। आज दुलारी को अनुभव हो रहा था कि टुन्नू का सम्बन्ध शरीर से न होकर आत्मा से है। आज तक टुन्नू के प्रति जो उपेक्षा दिखाई है। वह सब कृत्रिम थी। फिर भी वह यह स्वीकार करने के लिए तैयार न थी कि मेरे हृदय के किसी कोने में टुन्नू का आसन स्थापित है। वह अपने इस विचार में उलझती जा रही थी और इस उलझन से बचने के लिए चूल्हा जलाकर रसोई की व्यवस्था में जुट गई। इतने में फेंकू सरदार धोतियों का बंडल लिए प्रवेश किया। फेंकु ने धोतियों का बंडल पैरों में रखते हुए कहा-देखो कितनी बढ़िया धोतियाँ हैं। दुलारी ने बंडल पर ठोकर मारते हुए कहा-तुमने तो होली पर साड़ी देने का वादा किया था। फेंकू ने कहा रोजगार मन्दा चल रहा है वह वादा तीज पर पूरा कर दूंगा।

6. उसी समय विदेशी वस्त्रों की होली जलाने के लिए उन विदेशी वस्त्रों का

© JCERT not to be republished

संग्रह करते हुए 'भारत जननि तेरी जय हो' का गीत गाते हुए देश के दीवानों का दल भैरवनाथ की सँकरी गली में आया। बड़ी सी फैली हुई चादर पर पुराने धोती, साड़ी, कमीज, कुरता आदि की वर्षा हो रही थी। तभी सहसा दुलारी ने कोरी धोतियों का बंडल नीचे फैली चादर पर फेंक दिया। सबकी आँखें खिड़की की ओर उठीं वैसे ही खिड़की बन्द हो गई। जुलूस आगे बढ़ गया।

7. जुलूस के पीछे चलते हुए खुफ़िया पुलिस के रिपोर्टर अली-सगीर ने यह दृश्य देखा। खिड़की का पल्ला फिर खुला और धड़ाके से बन्द हुआ तभी अली सगीर ने फेंकू को देख लिया। फेंकू पुलिस का मुखबर भी था।

8. दुलारी फेंकू को झाड़ू मार चिल्ला रही थी-निकल-निकल मेरी देहरी से। उसे इतना गुस्सा था कि चूल्हे पर रखी बटलोही की दाल ठोकर से उलट दी और चूल्हे की आग बुझ गई। दुलारी के हृदय में जल रही जो आग थी उस आग को पड़ोसिनें ने मीठे वचनों की जलधारा से बुझा रही थीं। दुलारी उनसे पूछ रही थी-बताओ टुन्नू कभी यहाँ आता है तभी नौ वर्षीय बालक झींगुर ने आकर समाचार सुनाया कि टुन्नू महाराज को गोरे सिपाहियों ने मार डाला और लाश भी उठा ले गए। इस समाचार को सुन दुलारी स्तब्ध रह गई। वह स्तब्ध हो गई और आँखों में मेघमाला घिर आई। वहाँ पर उपस्थित पड़ोसिनें ने कर्कशा दुलारी की हृदय की कोमलता को देख दंग रह गईं। दुलारी उठी और सबके सामने सन्दूक खोली। टुन्नू की दी हुई धोती जिस पर टुन्नु के आँसू के काले धब्बे पड़े थे उसे पहन ली और तभी थाने से मुन्शी और फेंकू ने सूचना दी कि आज अमन सभा द्वारा आयोजित समारोह में गाना है।

सह-सम्पादक ने दुलारी और टुन्नू के सम्बन्ध और टुन्नू की मौत की रिपोर्ट प्रधान सम्पादक को दी तो प्रधान सम्पादक झल्ला उठे-कि यह क्या अलिफ लैला की कहानी रंग लाए हो। यदि इस रिपोर्ट को छाप दूँ तो कल ही अखबार बन्द हो जाएगा और सम्पादक बड़े घर पहुंचा दिए जाएंगे। आपके सिवा इसका और कोई भी गवाह है। खबर पढ़िए और शीर्षक भी पढ़िए।

9. इस सिलसिले में यह भी उल्लेख है कि टुन्नू का दुलारी से सम्बन्ध था। उसी दुलारी से टाउन हाल में आयोजित समारोह में नचाया-गवाया गया था। उसे भी टुन्नू की मृत्यु का संदेश मिल चुका था। वह बहुत उदास थी। उसने खद्दर की धोती पहन रखी थी। पुलिस उसे जबरदस्ती ले आई थी। वह गाना नहीं चाहती थी क्योंकि आठ घंटे पहले उसके प्रेमी की हत्या हो गई थी। उसे विवश होकर गाने के लिए खड़ा होना पड़ा। कुख्यात-अली सगीर ने मौसमी चीज गाने की फरमाइश की। उसने दर्द भरे गले से गाया-"एही ठैयाँ झुलनी हैरानी हो रामा, (Ehi Thaiyan

© JCERT not to be republished

Jhulni Ho Rama) कासों मैं पूछू?" उसकी दृष्टि बूट की ठोकर खाकर जहाँ टुन्नू गिरा था-वहीं थी। उसने गीत का दूसरा चरण गाया —

10. सास से पूर्वी, ननदिया से पूछू, देवरा से पूछत लजानी हो रामा? 'देवरा से पूछत' कहते-कहते वह बिजली की तरह एक दम घूमी और अली समीर की ओर देखकर लजाने का अभिनय किया और उसकी आँखों से आँसू की बूंदें छहर उठीं या यों कहिए कि वे पानी की बूंदे भी जो वरुणा में टुन्नू की लाश फेंकने से छिटकी और अब दुलारी की आँखों में प्रकट हुईं। दुलारी का वैसा रूप पहले कभी न दिखाई पड़ा था-आँधी में भी नहीं, समुद्र में भी नहीं, मृत्यु के गम्भीर आविर्भाव में भी नहीं।"

सम्पादक ने कहा-"सत्य है परन्तु छप नहीं सकता।" ।

12. इस प्रकार समाज का सच सामने लाने वाले संपादक का दोहरा चरित्र सामने आता है साथ ही इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि समाज के हर वर्ग ने अपने सामर्थ्य के अनुसार देश की आजादी में अपना योगदान दिया था।

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1. हमारी आजादी की लड़ाई में समाज के उपेक्षित माने जाने वाले वर्ग का योगदान भी कम नहीं रहा है। इस कहानी में ऐसे लोगों के योगदान को लेखक ने किस प्रकार उभारा है?

उत्तर- हमारी आजादी की लड़ाई में समाज के हर वर्ग का योगदान रहा है। समाज के सभ्य और कुलीन कहलाने वाले टुन्नू व दुलारी जैसे पात्रों के माध्यम से उस वर्ग को उभारने की कोशिश की है, जो समाज में हीन या उपेक्षित वर्ग के रूप में देखे जाते हैं। टुन्नू व दुलारी ऐसे लोग हैं, जो समाज में केवल हेय् दृष्टि से देखे जाते हैं। दुलारी एक मशहूर गायिका थी व टुन्नू भी दुलारी की तरह उभारता गायक था। टुन्नू ने आज़ादी के लिए निकाले गए जलुसों में भाग लेकर व अपने प्राणों की आहूति देकर ये सिद्ध किया कि ये वर्ग मात्र नाचने या गाने के लिए पैदा नहीं हुए हैं अपितु इनके मन में भी आज़ादी प्राप्त करने का जोश है। इसी तरह दुलारी द्वारा रेशमी साड़ियों को जलाने के लिए देना भी एक बहुत बड़ा कदम था तथा इसी तरह जल्से में बतौर गायिका जाना व उसमें नाचना* गाना उसके योगदान की ओर इशारा करता है।

प्रश्न 2 कठोर हृदय समझीजाने वाली दुलारी टुन्नू की मृत्यु पर क्यों विचलित हो उठी?

उत्तर - दुलारी का स्वभाव नारियल की तरह था। वह एक अकेली स्त्री थी। इसलिए स्वयं

© JCERT not to be republished

की रक्षा हेतु वह कठोर आचरण करती थी। परन्तु अंदर से वह बहुत नरम दिल की स्त्री थी। टुन्नू, जो उसे प्रेम करता था, उसके लिए उसके ह्रदय में बहुत खास स्थान था ।उसने जान लिया था कि टुन्नू उसके शरीर का नहीं, बल्कि उसकी आत्मा अर्थात् उसकी गायन-कला का प्रेमी था। फेंकू द्वारा टुन्नू की मृत्यु का समाचार पाकर उसका ह्रदय दर्द से फट पड़ा और आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली।शरीर से हटकर उसकी आत्मा को प्रेम करने वाले टुन्नू की मृत्यु पर गौनहारिन दुलारी का विचलित हो उठना स्वाभाविक थ किसी के लिए ना पसीजने वाला ह्रदय आज चित्कार रहा था। उसकी मृत्यु ने टुन्नू के प्रति उसके प्रेम को सबके समक्ष प्रस्तुत कर दिया उसने टुन्नू द्वारा दी गई खादी की धोती पहन ली।

प्रश्न 3. कजली दंगल जैसी गतिविधियों का आयोजन क्यों हुआ करता होगा? कुछ और परंपरागत लोक आयोजनों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- इस कहानी का कालखंड स्वतंत्रता से पूर्व का है। उस समय लोगों के पास आज जैसी सुविधाएँ और मनोरंजन के साधन न थे। क्योंकि उनकी आवश्यकताएँ आज जैसी न थी। लोग त्योहारों को बढ़-चढ़कर मनाते थे। इन त्योहारों के अवसरों पर खुशी को और बढ़ाने तथा थके हारे मन को उत्साहित करने के लिए कजली दंगल जैसे आयोजन किए जाते थे। भादों माह में तीज के त्योहारों के अवसर पर लोगों के मन को उत्साहित करने के लिए कजली दंगल जैसे आयोजन किए जाते थे। भादों माह में तीज के त्योहार के अवसर पर आयोजित किए जाने वाले लोकगीत गायन का उद्देश्य लोगों का मनोरंजन करना था। इसके अलावा ऐसे प्रतियोगिताओं से नए गायक कलाकारों को भी उभरने का मौका मिलता था। आल्हागायन, कुश्ती, लंबी कूद, जानवरों पक्षियों को लड़ाना कुछ ऐसे ही अन्य परंपरागत लोक आयोजन थे।

प्रश्न 4. दुलारी विशिष्ट कहे जाने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक दायरे से बाहर है फिर भी अति विशिष्ट है। इस कथन को ध्यान में रखते हुए दुलारी की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- दुलारी बेशक सामाजिक-सांस्कृतिक के दायरे से बाहर है। समाज के प्रतिष्ठित लोगों द्वारा इन प्रतिभावान व्यक्तियों व इनकी कलाओं को उचित सम्मान नहीं दिया गया है। लेकिन अपने व्यक्तित्व से इन्होंने अपना एक अलग नाम प्राप्त किया है, जो अतिविशिष्ट है। दुलारी की यही विशिष्टता उसे सबसे अलग करती है। ये इस प्रकार हैं -

प्रभावशाली गायिका- दुलारी एक प्रभावशाली गायिका है उसकी आवाज़ में मधुरता व लय का सुन्दर संयोजन है। पद्य में तो सवाल* जवाब करने में उसे कुशलता प्राप्त थी। उसका सामना अच्छे से अच्छा गायक भी नहीं कर पाता था।

देश के प्रति समर्पित- बेशक दुलारी प्रत्यक्ष रूप से स्वतन्त्रता संग्राम में ना कूदी हो पर वह अपने देश के प्रति समर्पित स्त्री थी। उसने बिना हिचके फेंकू द्वारा दी रेशमी साड़ियों के

© JCERT not to be republished

बंडल को आदोलनकारियों को जलाने हेतु दे दिया।

समर्पित प्रेमिका– दुलारी एक समर्पित प्रेमिका थी। वह टुन्नू से मन ही मन प्रेम करती थी। परन्तु उसके जीते* जी उसने अपने प्रेम को कभी व्यक्त नहीं किया। उसकी मृत्यु ने उसके ह्दय में दबे प्रेम को आंसुओं के रूप में प्रवाहित कर दिया।

निडर स्त्री– दुलारी एक निडर स्त्री थी। वह किसी से नहीं डरती थी। दुलारी का अपना कोई नहीं था। वह अकेली रहती थी। अतः अपनी रक्षा हेतु उसने स्वयं को निडर बनाया हुआ था। इसी निडरता से उसने फेकूं की दी हुई साड़ी जुलूस में फेंक दी। टुन्नू की मृत्यु के पश्चात् उसने अंग्रेज़ विरोधी समारोह में भाग लिया तथा गायन पेश किया।

स्वाभिमानी स्त्री– दुलारी एक स्वाभिमानी स्त्री थी। वह अपने सम्मान का समझौता करने के लिए बिलकुल तैयार नहीं थी। उसने अकेले रहकर सम्मान से सर उठाकर जीना सीखा था। फेंकू की दी साड़ी भी उसने इसलिए फेंक दी थी।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि दुलारी के चरित्र की विशिष्टता उसे एक अलग ही स्थान प्रदान करती है।

प्रश्न 5. दुलारी का टुन्नू से पहली बार परिचय कहाँ और किस रूप में हुआ?

उत्तर- दुलारी कजली की प्रसिद्ध गायिका थी। टुन्नू भी इसी प्रकार की पद्यात्मक शायरी करने वाला उभरता कलाकार था। तीज के अवसर पर आयोजित खोजवाँ बाजार के कजली दंगल में टून्नू का दुलारी से परिचय हुआ था। दुलारी खोज़वाँ बाजारवालों की ओर से कजली गाने के लिए आई थी। दुलारी ने दुक्कड़ पर जब कजली गीत सुनाया तो उसका जवाब देने के लिए। बजरडीहा की ओर से टुन्नू नामक सोलह-सत्रह वर्षीय युवा गायक उठ खड़ा हुआ, जिसने अपने जवाबी गायन और मधुर कंठ से श्रोताओं का ही नहीं दुलारी का भी ध्यान अपनी ओर खींचा। यहीं दोनों का प्रथम परिचय हुआ था।

प्रश्न 6. दुलारी का टुन्नू को यह कहना कहाँ तक उचित था- "तें सरबउला बोल ज़िन्नगी में कब देखले लोट? :::: दुलारी के इस आपेक्ष में आज के युवा वर्ग के लिए क्या संदेश छिपा है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- टुन्नू के गायन का जवाब देते हुए दुलारी ने कहा था-तै सरबउला बोल जिंदगी में कब देखले लोट "। इसका भाव था कि तुझ सिरफिरे ने जिंदगी में नोट कहाँ देखे हैं। यहाँ नोट के दोनों अर्थ सही हैं कि न तो सोलह-सत्रह वर्ष की कच्ची उम्र में टुन्नू ने परमेश्वरी लोट (प्रॉमिसरी नोट) ही देखे हैं और न ही नोट यानि धन-माया। टुन्नू के पिता गरीब पुरोहित थे, जो जैसे-तैसे कौड़ी-कौड़ी जोड़कर गृहस्थी चला रहे थे।

दुलारी के इस आक्षेप में आज के युवा वर्ग के लिए यही संदेश निहित है कि उन्हें सपनों की हसीन दुनिया से निकल कर कठोर यथार्थ का सामना करना चाहिए।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 7. भारत के स्वाधीनता आंदोलन में दुलारी और टुन्नू ने अपना योगदान किस प्रकार दिया?

उत्तर- भारत के स्वाधीनता आंदोलन में टुन्नू और दुलारी ने अपने-अपने ढंग से अपना योगदान दिया। टुन्नू जो महँगे मलमल के कपड़े पहनता था, उसे छोड़कर खादी के कपड़े पहनने लगा। वह विदेशी वस्त्रों की होली जलाने के लिए विदेशी कपड़े एकत्र करने वालों के जुलूस में शामिल होकर यह काम करता रहा और इसी कारण पुलिस जमादार की पिटाई का शिकार हुआ, जिससे उसकी जान चली गई। इस प्रकार देश की आजादी के लिए उसने अपना बलिदान दे दिया। टुन्नु की देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता से प्रभावित होकर दुलारी ने अपनी विदेशी साड़ियों का बंडल जलाने के लिए फेंक दिया तथा उसने सूती साड़ी पहनकर अपने ढंग से योगदान दिया।

प्रश्न 8. दुलारी और टुन्नू के प्रेम के पीछे उनका कलाकार मन और उनकी कला थी। यह प्रेम दुलारी को देश-प्रेम तक कैसे पहुँचाता है?

उत्तर- टुन्नू सोलह-सत्रह वर्ष का युवक था तो दुलारी ढलते यौवन की प्रौढ़ा थी। टुन्नू घंटे-आधे घंटे आकर दुलारी के पास बैठता और उसकी बातें सुनता। वह केवल दुलारी की कला का प्रेमी था। उसे दुलारी की आयु, रंग या रूप से कुछ लेना-देना न था। दुलारी भी टुन्नू की कला को पहचान कर उसका मान करने लगी थी। यह परस्पर सम्मान का भाव ही प्रेम में बदल गया। कहने को तो दुलारी ने होली पर गाँधी आश्रम से धोती लाने वाले टुन्नू को फटकार कर भगा दिया, लेकिन टुन्नू के जाने के बाद उसे टुन्नू का बदला वेश, उसका कुरता और गाँधी टोपी का ध्यान आया तो उसे समझने में देर न लगी कि टुन्नू स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गया है। एक सच्ची प्रेमिका की तरह उसने भी तुरंत वही राह अपनाने का फैसला कर लिया और फेंकू सरदार की लाई हुई विदेशी मिलों में बनी महीन धोतियाँ होली जलाने के लिए स्वराज-आंदोलनकारियों की फैलाई चद्दर पर फेंक दी। यह एक छोटा-सा त्याग वास्तव में एक बड़ी भावना की अभिव्यक्ति था।

प्रश्न 9. जलाए जाने वाले विदेशी वस्त्रों के ढेर में अधिकांश वस्त्र फर्ट-पुराने थे परंतु दुलारी द्वारा विदेशी मिलों में बनी कोरी साड़ियों का फेंका जाना उसकी किस मानसिकता को दर्शाता है?

उत्तर- विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार के लिए वस्त्रों का संग्रह कर रहे देश के सेवकों की चादर पर वस्त्र-कमीज, धोतियाँ, कुर्ता, साडी आदि की जो वर्षा हो रही थी, उनमें अधिकांश फटे और पुराने थे परंतु दुलारी ने विदेशी मिलों में बनी कोरी साडियों का वह बंडल फेंका जो एकदम नया था और जिनकी साड़ियों की तह भी नहीं खुली थी। उसका ऐसा करना देशभक्ति की उत्कट भावना और सच्ची राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति करता है। इसके अलावा इससे टुन्नू के प्रति प्रेम की मानसिकता भी दिखाई देती है।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 10. "मन पर किसी का बस नहीं; वह रूप या उमरे का कायल नहीं होता।" टुन्नू के इस कथन में उसका दुलारी के प्रति किशोर जनित प्रेम व्यक्त हुआ है परंतु उसके विवेक ने उसके प्रेम को किस दिशा की ओर मोड़ा?

उत्तर - टुन्नू का यह कथन सत्य है। वैसे भी टुन्नू का प्यार आत्मिक था। इसलिए उसे दुलारी की आयु या उसके रूप से कुछ लेना-देना नहीं था। क्योंकि यह प्रेम मात्र आकर्षण या शारीरिक भूख से प्रेरित न था; इसलिए उनके विवेक ने इसे देश-प्रेम की ओर मोड़ दिया, जो स्वार्थ से परे प्रेम का सर्वोच्च स्वरूप है। देश-प्रेम ही आत्मा की पवित्रतम भावना है। टुन्नू और दुलारी का प्रेम उनकी आत्मा द्वारा चालित होकर देश-प्रेम में बदल गया।

प्रश्न 11. 'एही तैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा।' का प्रतीकार्थ समझाइए।

उत्तर - 'एही तैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!' का शाब्दिक अर्थ है-इसी जगह पर मेरी लौंग अर्थात् नाक का आभूषण खो गया है। इसका प्रतीकार्थ है-टाउन हाल का वह स्थान जहाँ पुलिस जमादार अली सगीर द्वारा टुन्नू की हत्या कर दी गई थी। टुन्नू दुलारी से प्रेम करता था और दुलारी जो कठोर हृदयी समझी जाती थी, टुन्नू से प्रेम करने लगी थी। वह उसी हत्या वाली जगह की ओर संकेत करके कहती है-"इसी स्थान पर उसका सबसे प्रिय (टुन्नू और उसका प्रेम) खो गया है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो राम! पाठ के रचनाकार कौन हैं?

(a) प्रेमचंद्र

(b) कमलेश्वर

(c) जाबिर हुसैन

(d) शिवप्रसाद मिश्र रूद्र

उत्तर-(d) शिवप्रसाद मिश्र रूद्र

प्रश्न 2. शिवप्रसाद मिश्र का जन्म कब हुआ?

(a) 2004 में (b) 1911 में

(c) 1828 में (d) 1990 में

उत्तर-(b) 1911 में

प्रश्न 3. टुन्नू कितने वर्ष का था?

(a) 17 वर्ष (b) 20 वर्ष

(c) 23 वर्ष (d) 25 वर्ष

उत्तर-(a) 17 वर्ष

प्रश्न 4. शिवप्रसाद मिश्र रूद्र का जन्म कहाँ हुआ था?

(a) दिल्ली में (b) काशी में

(c) इलाहाबाद में (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(b) काशी में

प्रश्न 5. अली सगीर कौन था?

(a) दुलारी का चाहने वाला

(b) एक ठेकेदार

(c) खुफिया पुलिस का रिपोर्टर

© JCERT not to be republished

(d) पुलिस का अधिकारी कारणा

उत्तर-(c) खुफिया पुलिस का रिपोर्टर

प्रश्न 6. दुलारी की टुन्नू से पहली मुलाकात कहाँ हुई थी?

(a) खोजवाँ बाजार में

(b) सदर बाजार में

(c) एक मेले में

(d) एक कवि सम्मेलन में

उत्तर-(a) खोजवाँ बाजार में

प्रश्न 7. 'कजली' क्या है'?

(a) एक गाय का नाम है

(b) एक पक्षी का नाम है

(c) एक राग का नाम है

(d) एक तरह का लोकगीत है

उत्तर-(d) एक तरह का लोकगीत है

प्रश्न 8. टुन्नू कहाँ मारा गया?

(a) टाउन हॉल में

(b) थाने में

(c) घर

(d) भेरवनाथ की संकरी गलियों में

उत्तर-(a) टाउन हॉल में

प्रश्न 9. टुन्नू ने कजरी दंगल में किसकी ओर से भाग लिया?

(a) खेजवाँ बाजार वालों की

(b) पलटन बाजार वालों की ओर से

(c) लालबाग वालों की ओर से

(d) बजरहीड़ा वालों की ओर से

उत्तर-(d) बजरहीड़ा वालों की ओर से

प्रश्न 10. टुक्कड़ किसे कहते हैं?

(a) शहनाई के साथ बजाए जाने वाले तबले जैसे बीज को

(b) रामढोल को

(c) मोर बीन को

(d) तम्बूरे को

उत्तर-(a) शहनाई के साथ बजाए जाने वाले तबले जैसे बीज को

© JCERT not to be republished